पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं
Paradhin Supnehu Sukh Nahi

Best 4 Essays on "Paradhin Sapnehu Sukh Nahi"

निबंध नंबर :-01

प्रस्तावना : सामान्यतः मानव अपने जीवन में जो कुछ भी कार्य करता है, उसका एक मात्र उद्देश्य होता है कि वह अपने को सुखी कर सके। अपना विकास कर सके और जितना भी जीवन उसने जीना है उतना स्वाभाविक रूप में जी सके। लेकिन मानव का आदि काल से अब तक का इतिहास यह बताता है कि उसकी इच्छा के मार्ग में अनेक बाधाएँ आती हैं। यद्यपि वह सभी बाधाओं को दूर करने की कोशिश करता है फिर भी परिस्थितियाँ उसे ऐसा जीवन जीने पर विवश कर देती हैं जो उसको अच्छा नहीं लगता। जब हम पराधीनता के विषय में बात करते हैं, तो एक तथ्य यह सामने रखना होता है कि पराधीनता की विवेचना कई दृष्टियों से हो सकती है।

पराधीनता का एक रूप है स्वतन्त्रता का न होना अर्थात् जो व्यक्ति किसी की इच्छा के अधीन होता है, उसे पराधीन कहा जाता है। यह स्वाभाविक है कि अपने अनुसार काम न करने पर व्यक्ति सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इसीलिए कहा जाता है कि पराधीन व्यक्ति सुख प्राप्त नहीं कर सकता।

पराधीनता का अभिशाप : पराधीनता का अभिशाप सबसे बड़ा अभिशाप है। यदि यह पूछा जाए कि इस विश्व में कौन ज्यादा सुखी है, तो एक उत्तर यही होगा कि जो स्वतन्त्र है या पराधीन नहीं है वह सुखी है। सुख यद्यपि बाहरी वस्तुओं पर निर्भर करता है। फिर भी उसकी वास्तविक सत्ता अन्तर में विद्यमान रहती है। हम जब पराधीन होते हैं, तो कुछ भी अपनी इच्छा से नहीं कर सकते और हमें प्रत्येक काम के लिए दूसरे की इच्छा पर निर्भर रहना पड़ता है। यह जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।

पराधीनता का दूसरा रूप है गुलामी : प्राचीन काल में दास प्रथा थी। अमीर व्यक्ति गरीब दासों को खरीद लिया करते थे। उनके अधिकार समाप्त हो जाते थे। उनका खाना-पीना या अन्य काम मालिक पर निर्भर करता था। धीरे-धीरे यह दास प्रथा समाप्त हुई। इसकी समाप्ति का कारण था कि मानवों में स्वाधीनता की चेतना जाग गई थी और वे पराधीनता के दुर्गुण समझने लगे थे। उन्होंने इस विषय में आन्दोलन किए और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिये खुन की क्रान्तियाँ भी हुई। इस विषय में प्राचीन राजसत्ता की चर्चा भी की जा सकती है। राजतंत्र में सामान्यत: शासक के विपरीत कुछ भी कहने की स्वतन्त्रता नहीं होती है। उसे भी एक प्रकार की पराधीनता ही समझना चाहिए।

व्यक्ति के सन्दर्भ में : वस्तुत: इस बात को व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के संदर्भ में देखा जा सकता है। जो व्यक्ति पराधीन होता है उसका विकास रुक जाता है, उसमें अपने आप स्वतन्त्रता से निर्णय लेने की शक्ति समाप्त हो जाती है। उसमें हीन भावना आ जाती है। इस तरह जो व्यक्ति पराधीन होता है, उसे जीवन के सुख मिलने दूभर हो जाते हैं। तुलसीदास जी ने इस बात को चाहे नारी के प्रसंग में कहा हो; पर यह उक्ति सभी पर चरितार्थ होती है। भारतीय समाज में जैसा कि पहले दासों के विषय में कहा गया है, स्त्रियों की दशा भी अच्छी नहीं रही। यद्यपि यह विवाद का विषय है कि प्राचीन काल में स्त्रियों को स्वतन्त्रता प्राप्त शी या नहीं। दोनों ही बातों के पक्ष में प्रमाण मिल जाते हैं और यह भी सर्वविदित है कि नारी की दशा हमारे देश में बहुत अच्छी नहीं रही। सभी धर्म शास्त्रों में उसे हर दशा में पुरुष की छाया या अनुगामिनी बताया गया है। उसके सभी अधिकारों को पिता, पति और पुत्र के अधीन कर दिया गया। आधुनिक काल में साहित्यकारों में सभी कवियों व लेखकों ने नारी की इस दशा पर लिखा और उसकी स्वतन्त्रता की माँग की थी-कविवर पंत ने लिखा है :

मुक्त करो नारी को ।

चिर वन्दिनी सुकुमारी को ।।

और प्रसाद जी ने ध्रुवस्वामिनी में इस समस्या को उभारा है। उन्होंने ध्रुवस्वामिनी के मुख से कहलवाया है कि पराधीनता की भावना उसकी नस-नस में युगों से समा गई है। एक स्वतन्त्र राष्ट्र और अच्छे समाज का निर्माण करने के लिए नारी की स्वतन्त्रता ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति की स्वतन्त्रता आवश्यक होती है। हम देख रहे हैं कि जहाँ पर नारी स्वतन्त्र है वहाँ पर और चाहे कुछ दुर्गुण समाज में आ गये हों; पर समग्र राष्ट्र की उन्नति हुई है।

राष्ट्र के सन्दर्भ में : किसी भी राष्ट्र के सन्दर्भ में यह उक्ति अधिक विचार का विषय बन सकती है। जब कोई राष्ट्र पराधीन होता है, तो उसकी जनता सुखी नहीं रह सकती। पराधीन बनाने वाला राष्ट्र (देश) अपने लाभ की बातें करता है। भारत को ही लीजिये। अंग्रेजो की दासता के समय भारतीय जनमानस का विकास रुक गया। हमें अपनी सभ्यता और संस्कृति पर दूसरे देश की सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव स्वीकार करना पड़ा। इससे यद्यपि कुछ लाभ भी अवश्य हुआ पर पराधीनता के लाभ से स्वाधीनता की हानि कहीं अधिक श्रेयस्कर मानी गई है। भारतवासियों ने पराधीनता की बेड़ी काटने का यत्न किया। पराधीनता के दिनों की दशा का मार्मिक वर्णन भारतेन्दु की रचना में हुआ है:

अंग्रेज राज सुख साज सबै अति भारी ।

पै धन विदेश चलि जात यहै अति ख्वारी ।।

स्वतंत्रता का महत्त्व : भारत सोने की चिड़िया कहा जाता रहा है। यहाँ पर भी पराधीनता को काटने के लिये क्रान्तियाँ हुईं और स्वतन्त्रता का आन्दोलन छिड़ा। अनेक व्यक्तियों को अपना बलिदान करना पड़ा तब कहीं जाकर स्वाधीनता मिली। अत: यह स्पष्ट है कि स्वाधीनता ही विश्व का सबसे बड़ा सुख और जीवन की महत्ता है। यदि पराधीनता में सुख मिलता होता, तो मानव लड़-झगड़कर भी स्वाधीनता लेने की कोशिश न करता।

पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब किसी को सजा देनी होती है, तो कैद कर दिया जाता है। उसकी सामाजिक स्वतन्त्रता छीन ली लाती है और उसे अकेला कर दिया जाता है। सामाजिक और वैयक्तिक स्वतन्त्रता व्यक्ति के लिये सबसे बड़ा धन है। पराधीन व्यक्ति सदा दूसरे की इच्छा का

अनुगमन करता है। इसी कारण विश्व में बड़े-बड़े उलट फेर हुए। कर्म, राजनीति और सम्प्रदाय किसी भी स्थिति की पराधीनता व्यक्ति को रुचती नहीं। अत: यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि पराधीन व्यक्ति को सपने में भी सुख नहीं मिलता और सुखी जीवन के लिये स्वतन्त्रता का होना अत्यावश्यक है।

निबंध नंबर :-02

पराधीन सपनेहुं सुख नाहिं

Paradhin Supnehu Sukh Nahi

पराधीन व्यक्ति स्वप्न में भी सुखी नहीं हो सकता। व्यक्ति मुक्त जन्म लेता है-मुक्त रहना उसका प्रकृति है, और प्रवृत्ति है। प्रकृति और प्रवृत्ति के विरुद्ध जाने में सुख होना संभव ही नहीं है। आधीनता से आत्महीनता की भावना आती है, जो आत्मविश्वास को ध्वस्त कर देती है। मन में गहरी निराशा और उदासी घर कर लेती है। ऐसी स्थिति में मन बनवास दिया सा' महसूस करता है। जब हमारा देश परतंत्र था तब स्वामी रामतीर्थ ने अपनी विदेशयात्रा से लौटकर कटु सत्य उजागर किया था, उन्होंने कहा था-"मैं जहाँ-जहाँ गया, वहाँ परतंत्र होने का कलंक मेरे माथ परल सम्मान भी अर्थहीन हो गया।" स्वतंत्रता पाने के लिए अगणित भारतवासियों ने लाठियाँ खाई, जेलों में सड़े, हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गए। इतना त्याग, इतना बलिदान देने का जज्बा किसी छोटी-मोटी चीज पाने के लिए स्वतंत्रता तो इतनी अनमोल होती है कि उसके बदले में व्यक्ति अपने प्राण तक न्योछावर करने को तत्पर हो जाता है। आज भले ही हम स्वतंत्र राष्ट्र हैं किंतु आज भी पराधीनता की अनेकानेक बेड़ियों में हम जकड़े हैं। नारी आज भी पुरुष की गुलामी करने को अभिशप्त है। गाँवों में आज भी हरिजन सवर्णों के कुएँ से पानी तक नहीं ले सकते। आज भी बंधुआ-मजदूरी की प्रथा कायम है। आज भी नन्हा बचपन मज़दूरी करने को मजबूर है। अंधविश्वासों और रुढ़ियों की गुलामी से भी हम कहाँ मुक्त हो पाए हैं ? ऐसे में एक सुखी समाज और राष्ट्र की कल्पना कैसे की जा सकती है? व्यक्ति हो या समाज या फ़िर राष्ट्र, स्वतंत्रता हम सबका जन्मसिद्ध अधिकार है, सुख का आधार है। किसी ने सही कहा है-"स्वर्ग में दास बनकर रहने की अपेक्षा नरक में शासन करना अच्छा है।"

निबंध नंबर :-03

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं
Paradhin Sapnehu Sukh Nahi

संकेत–बिंदु–स्वतंत्रता का महत्त्व ।

स्वतंत्रता एक मणि के समान।

पराधीनता का अर्थ ।

पराधीनता से शारीरिक व मानसिक पतन।

पराधीनता जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप।

स्वतंत्रता का महत्त्व तो पशु-पक्षी भी जानते हैं। पिंजरे में बंद पक्षी तथा उन्मुक्त गगन में विचरण करने वाले पक्षी के जवीन में जमीन-आसमान का अंतर होता है। सोने के पिंजरे में बंद पक्षी सब सख-सुविधा होते हुए भी बाहर निकलने, आजाद होने के लिए छटपटाता रहता है। स्वतंत्रता एक ऐसी मणि है जिसे संसार का कोई भी प्राणी खोना नहीं चाहता। वास्तव में पराधीनता का अर्थ है 'आत्मा का हनन' । इसलिए गुलामी के स्वर्ग की अपेक्षा आजादी के नरक को श्रेष्ठ कहा जाता है। पराधीनता दुख है, विषाद है, अकर्मण्यता को जन्म देने वाली है। पराधीनता बौद्धिक विकास को अवरुद्ध कर देती है, व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक पतन की ओर धकेलती है। पराधीन व्यक्ति एक ऐसे यंत्र की भाँति होता है जिसका संचालन दूसरे के हाथ में होता है। पराधीनता में रहकर व्यक्ति अपना अस्तित्व, स्वाभिमान, गौरव सब कुछ गँवा बैठता है। उसका जीवन करुण क्रंदन बनकर रह जाता है। पराधीनता चाहे व्यक्तिगत हो अथवा जाति या देश की, सभी स्तरों पर असह्य है। स्वतंत्र व्यक्ति जीवन में एक बार मरता है परंतु पराधीन व्यक्ति बार-बार मृत्यु को प्राप्त होगा। पराधीनता व्यक्ति, जाति, समाज एवं किसी भी राष्ट्र के जीवन के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। अतः यह कहना अनुचित न होगा—'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं।'

निबंध नंबर :-04

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं

Paradhin Sapnehu Sukh Nahi

संकेत बिंदु –स्वतंत्रता का महत्त्व –पराधीनता का कलंक –पराधीनता का स्वरूप

पराधीनता सबसे बड़ा अभिशाप है। पराधीनता व्यक्ति और देश की स्वतंत्रता को नष्ट कर देती है। स्वतंत्रता का बहुत महत्त्व है। पशु-पक्षी भी स्वतंत्र रहना चाहते हैं। उन्हें भी पराधीनता का जीवन स्वीकार नहीं है। पराधीनता तो एक प्रकार का कलंक है। इसमें व्यक्ति का पूर्णत: विकास नहीं हो पाता है। पराधीन व्यक्ति की दशा बड़ी दयनीय हो जाती है। किसी के अंतर्गत रहकर जीवन बिताना ही पराधीनता है। पराधीनता की दशा में उसका सभी प्रकार से शोषण किया जाता है। पक्षी भी स्वच्छंद उड़ान में किसी भी बाधा को सहन नहीं करते। हमें पराधीनता को मिटाने का हरसंभव प्रयास करना चाहिए। पराधीन व्यक्ति को कोई भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता। उसे हर जगह अपमान झेलना पड़ता है।